www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

अजमेर में स्वामी जी का पादरी राबिन्सन, ग्रे और शुल्ब्रेड के साथ जीव, ईश्वर, सृष्टि–क्रम और वेद–विषय पर तीन दिन तक संवाद होता रहा। स्वामी जी बड़ी योग्यता से उत्तर देते रहे। चार दिन, ईसा का ईश्वर होना, मरकर जी उठना, फिर आकाश पर आरोहण करना इत्यादि बातों पर स्वामी जी ने प्रश्न किये। इनका पादरियों से कोई उत्तर न बन आया। इस पर लड़कों ने ताली पीट दी। परन्तु स्वामी जी ने उनको ऐसा करने से रोक दिया। उस शास्त्रार्थ में पादरियों ने एक वेद–मन्त्र का नाम लेकर कुछ पाठ पढ़ा। परन्तु स्वामी जी ने जब उसका पता पूछा तो वे कुछ न बता सके। अगले दिन संवाद के लिए पादरी नहीं आये। कहते हैं कि बाद में किसी आक्षेप के कारण चिढ़कर पादरी शुल्ब्रेड ने स्वामी जी से कहा कि ऐसी बातों से आप कभी कारावास में चले जाएंगे। स्वामी जी ने बड़ी गम्भीरता से मुस्कराते हुए कहा–'सत्य के लिये कारावास कोई लज्जाजनक वार्त्ता नहीं है। धर्म–पथ पर आरूढ़ होकर मैं ऐसी बातों से सर्वथा निर्भय हो गया हूँ। प्रतिपक्षी लोग यदि अपने प्रभाव से ऐसा कष्ट दिलाएंगे तो जहाँ कष्ट सहते हुए मेरे चित्त में शोक की कोई तरंग भी न उत्पन्न होगी वहाँ मैं अपने प्रतिपक्षियों की अकल्याण–कामना भी कभी नहीं करूंगा। पादरी जी! मैं लोगों के डराने से सत्य को नहीं छोड़ सकता। ईसा को भी लोगों ने फांसी पर लटका ही तो दिया था।'

–श्रीमद्दयानन्द–प्रकाश

"हमारे पूर्वज"

यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है, इसके निवासी आर्य हैं
विद्या, कला, कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं
पर संतान उनकी आज हम अधोगति में हैं पड़े
पर चिन्ह उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य समाज कण्डाघाट के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ७१वां   विक्रमी सम्वत् २०७०   सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११४   सितम्बर २०१३

www.thearyasamaj.org

ऋग्वेद

यजुर्वेद

स्वामी सर्वानन्द

महर्षि दयानन्द

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यों के तीर्थ

दयानन्द मठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब) को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्टूबर, 2013

को बड़ी धूम—धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा।

जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती

सामवेद

अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क : 01875–220110, 094782–56272, 94172–20110

अथर्ववेद

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मो. : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र0, मो. : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 01733.220060
परामर्शदाता	: रत्न लाल वैद्य, उप–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मो. : 94184–60332
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), आर्य समाज–कण्डाघाट मो. : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी) मो. : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, सुन्दर नगर मो. : 94181–54988
प्रबन्ध सम्पादक	: 1. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मो. : 94591–05378
	2. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मो. : 98161–25501
सह सम्पादक	: राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
कोषाध्यक्ष	: मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.)
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा उपकार्यालय मण्डी से प्रकाशित किया।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

हमारे देश में प्राचीनकाल से मातृ देवो भव के विचार और संस्कार बचपन से ही बच्चों को घुट्टी की तरह पिला दिये जाते थे, ताकि सन्तानें अपने माता–पिता, गुरुजनों और अतिथियों तथा बुजुर्गों का मान–सम्मान करना सीखें। उनके आशीर्वाद से अपने जीवन को कल्याणकारी और मंगलमय बनायें। इन्हीं विचारों के आधार पर प्राचीनकाल में श्रवण कुमार अपने अन्धे और बूढ़े माँ–बाप को वहंगी में डालकर धार्मिक स्थलों की यात्रा हेतु कन्धें पर उठा कर ले गया था। तभी से आज भी हजारों सालों के बीतने के उपरांत लोग बड़ी श्रद्धा से श्रवण का नाम याद रखते हैं। वह अत्यन्त धीर, वीर और गम्भीर बालक था जो ऋषि मुनियों के उपदेश को वेद वाक्य समझकर उन पर धैर्यपूर्वक आचरण और मनन करता था। आज ही नहीं अपितु युगों–युगों तक माँ–बाप अपनी संतानों में श्रवण कुमार जैसे गुण देखना पसन्द करते हैं, जो सबकी आंखों का तारा केवल और केवल माता–पिता की सेवा करने का संकल्प लेकर बन गया। शास्त्रों में माता को सबसे बड़ा तीर्थ कहा है। माता के आशीर्वाद से ही बालक–बालिका का सर्वांगीण विकास सम्भव है। जगत–गुरु शंकराचार्य से किसी ने प्रश्न किया कि सबसे अभागा मनुष्य कौन है ? तो उन्होंने उत्तर दिया जिसकी माँ मर गई है। आदि जगत गुरु शंकराचार्य की यह बात अपने आप में सत्य, सार्थक और महत्वपूर्ण है। एक छोटा सा बालक बाहर से रोता–चिल्लाता जब घर में पहुँचता है तथा माँ पुचकार कर अपना प्रेममयी हाथ उसके सिर पर फेरती हुई उसे अपनी गोद में बैठाती है तो बालक माँ की ममतामयी गोद में बैठकर सभी प्रकार की थकान, कष्ट और भय भूल जाता है। उसे लगता है कि तीनों लोकों की संपदा उसके आस–पास माँ की ममतामयी गोद में बैठकर प्राप्त हो रही है। जब हम माताओं की माता उस जगत जननी की गोद में बैठते होंगे तो कितना आनन्दित होते होंगे ? यह सहज में ही अनुमान लगाया जा सकता है। तब भक्त कह उठता है। 'जगत जननी माँ हमें तेरा ही सहारा। तेरे बिना और कोई नहीं हमारा, भव से कर दो पार नमस्कार–नमस्कार।' मर्यादा पुरूषोतम राम भी कह उठते हैं : हे लक्ष्मण मुझे धन–धान्य से सम्पन्न यह स्वर्णमयी लंका मन को नहीं भा रही है। वे कह उठते हैं "जननी जन्म–भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" अर्थात् मुझे अपनी जन्मदाती, माँ और अपनी जन्मभूमि अयोध्या स्वर्ग से भी प्यारी लगती है। जिसे माँ और मातृभूमि से इतना लगाव और तड़प है, उसका जीवन स्तुत्य, धन्य और सराहनीय है। अपनी माँ और मातृभूमि का प्यार हमारी संस्कृति का मुख्य नियम और ऋषि–मुनियों की इच्छा और अकांक्षा का सुन्दर, स्पष्ट और सरल प्रतीक है। हिमालय को देखकर कवि कह उठता है :

मेरे नगपति मेरे विशाल, मेरी माँ के हिम करीट,
मेरी भारत माँ के भाल, मेरे नगपति मेरे विशाल।

माँ का वात्सल्य और ममतामयी हाथ के न रहने पर जगतगुरु शंकराचार्य के शब्दों में सचमुच मनुष्य को अभागा ही कहा जायेगा। हमारे ऋषि–मुनियों ने जीवित माता–पिता, गुरु तथा अतिथि सेवा पर बल दिया है और इन्हें ही सच्चा तीर्थ, श्राद्ध और तर्पण माना है। अभी कुछ दिन पूर्व समाचार पत्र में पढ़कर हैरानी हुई कि एक युवक अपनी सुन्दर पत्नी और बालक को लेकर तीर्थ यात्रा पर अपनी बूढ़ी बीमार माँ को घर छोड़कर तीर्थ को निकल गया। अब बताईये की ऐसी यात्रा का क्या लाभ और पुण्य ? इससे तो पूर्वजों की इच्छाऐं मिट्टी में मिल जाती हैं, जिन्होंने अपनी संतानों से आशायें लगाई होती हैं और मन और मस्तिष्क में नाना प्रकार के अरमान संजोये होते हैं कि बड़ा होकर हमारा लाडला कुल दीपक और बुढ़ापे की बैशाखी बनेगा। जब कालान्तर में पूर्वजों के सभी अरमान उजड़ जाते है तब उन्हें असली बातों का पता चलता है कि जो विचार हमने सन्तानों के सम्बन्ध में संजोये रखे थे वे केवल मृग तृष्णा ही थी। यह ठीक है कि अब भी संस्कारित परिवारों की कमी नहीं है। आज बहुत से परिवारों के आचार–विचार, रहन–सहन और खान–पान को देखकर ऐसा आभास होता है कि ये सब रावण के खानदान से सम्बन्ध रखते हैं। केवल राम, कृष्ण, नानक–गोबिन्द नाम रखने से कुछ भी होने वाला नहीं। जब तक ठीक प्रकार से सोच समझ कर हम उन विभूतियों के पद्चिन्हों का अनुकरण और अनुसरण नहीं करते। कबीर दास लोगों को कर्म भूमि में उतरने हेतु कुछ इस प्रकार अपने सुविचारों की दोहे के रूप में अमृतवर्षा करते हैं :–

खड़ा कबीरा बाट में लिया लकुटिया हाथ,
जो घर फूंके आपनों चले हमारे साथ।

वास्तव में सेवा को ही ऋषि–मुनियों ने सच्चा ईश्वर प्राप्ति का मार्ग माना है। 'सेवा धर्म परम गहनो' के अतिरिक्त समाज के बाल–युवाओं को नाना प्रकार के सुविचारों से सुसंस्कृत करने का प्रयास किया है। देश, जाति और मानवता की सेवा से अभिप्राय है कि हम मन, वचन और कर्म से कभी भी और किसी भी परिस्थिति में किसी का अहित चिन्तन न करे। ईश्वर को प्राप्त करने का सबसे बड़ा मार्ग मानव सेवा है–अर्थात् मन, वचन और कर्म ने मानव विशेष का शास्त्रों में

www.thearyasamaj.org

वर्णित माता–पिता, गुरू, आचार्य और अतिथि की सेवा करना है। इनके चरणों को प्रतिदिन स्पर्श करना और इनसे आशीर्वाद प्राप्त करना ही सर्वोत्तम तीर्थ है। शास्त्रों में लिखा है :

अभिवादनशीलस्य नित्यम् वृद्धोपसेविनः,
चत्वारितस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या, यशोबलम।

आयु, विद्या, यश और बल को बढ़ाने का सर्वोतम मार्ग माता–पिता और बुजुर्गों की सेवा करना है। इनकी शुभकामनाओं के लिए मनुष्य निरन्तर उन्नति के शिखर पर पहुंचता है। वह कुन्दन बनकर संसार के पाप युक्त अन्धकारों का नाश करता है तथा सुख युक्त शान्ति की सुन्दर वायु से समाज को सुगन्धित करता है। पुराणकार का भी कथन है कि मां से बड़ा कोई तीर्थ नहीं है। माँ से बड़ा कोई बालक का रक्षक, हितैशी और प्यार करने वाला नहीं है। अतः आदि शंकराचार्य जी का यह कथन सर्वथा युक्तियुक्त है कि बच्चे को संसार का सबसे बड़ा सुख माँ की गोद और सबसे बड़ा दुःख बालक का असमय उस ममतामयी गोद के सुख से वंचित होना है। वर्तमान परिवेश में माँ–बाप सभी अपने कर्त्तव्य से भटकते हुये दिखाई दे रहे हैं। दिनांक १३ अगस्त के 'पंजाब केसरी' के सम्पादकीय में पढ़ने में आया कि लगभग १५० लाल कच्छाधारी युवकों ने हुडदंग मचाया। पुलिस की गोली से बाईक पर बैठा युवक घायल हो गया और कुछ ही क्षणों में मृत्यु का शिकार हो गया। उसकी विधवा माँ को उसके मरने का जब समाचार सुनाया गया तो वह हैरान रह गयी क्योंकि थोड़ी देर पहले वह अपने बालक को विस्तर पर सुला कर आंगन का गेट बन्द करके विस्तर पर सो गई थी। ना मालूम कब और कैसे बेटा बाईक लेकर माँ को चकमा देकर नौ–दो ग्यारह हो गया ? हमारे चिन्तक ऋषि मुनियों का बालक–बालिकाओं की पहली यही शिक्षा हुआ करती थी कि माँ–बाप और गुरु तथा बुजुर्गों का आदर करो, वही सबसे बड़ी शक्ति और भक्ति है। सुन्दरनगर में एक महापुरूष मास्टर रामसरण जी हुआ करते थे। वे ऋषि दयानन्द के परम भक्त थे। ढौंगवाद के प्रबल विरोधी थे। वे अपनी वृद्ध विधवा माता की रात–दिन सेवा करते थे। दिन में दो बार उनके विस्तर की चादर बदलते थे और अपने हाथ से माता की हर प्रकार से सेवा करते थे। उनकी माँ भी अपने पुत्र की सेवा से अति प्रसन्न थी। श्री रामशरण गुलेरिया अपनी माता को कहते थे कि माँ जो तुम चाहोगी मैं अंतिम सांस तक आपके आदेश का पालन करूंगा। मरने के उपरान्त कोई भी पौराणिक अर्थात् पिण्डदान आदि जो ढौंगवाद का प्रतीक हैं नहीं करूंगा। अपने जीवनकाल में तुम जो चाहोगी उसे पूरा करूंगा। उनकी माता अपने बेटे की सेवा से अति प्रसन्न थी। कुशल क्षेम पूछने वाले व्यक्तियों से वह अपने सुपुत्र श्री रामशरण गुलेरिया का वर्णन अवश्य करती और सभी से कहती कि यदि भगवान किसी को सन्तान दे तो मेरे पुत्र जैसी।

दुर्भाग्यवश एक दिन वह भी आया जब श्री रामशरण गुलेरिया जी की माँ सदा के लिये इस नश्वर शरीर को छोड़कर चली गई। उन्होंने अपनी माता का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया। सुन्दरनगर की जनता में इस संस्कार की चर्चा घर–घर में होने लगी। बुजुर्ग लोगों ने कहा कि गुलरिया जी ने न तो अपनी माँ का पिण्डदान किया और न ही दस दिन तक घर के बाहर मटकी लटकाई। निश्चित रूप से इनकी माँ की अधोगति और दुर्गति होगी। निश्चित रूप से उसे चुड़ैल और पेशाच, नीच योगियों के चक्कर काटने पड़ेंगे। इस सम्बन्ध में स्वयं मास्टर राम शरण कहा करते थे कि मैं इन पाखण्डों को नहीं मानता जिनमें जीवित माता–पिता की सेवा को प्रधानता न दी हो। वे कहा करते थे ऐसी कुप्रथा का क्या लाभ :–

'जीते बाप से दंगम दंगा मरे बाप को पहुंचाते गंगा,
जीते बाप से लातम लात मरे बाप को दूध और भात।'

लेकिन श्री रामशरण की बातें पुराणपंथियों के सिद्धान्तों के बिल्कुल विपरीत थी। ऋषि दयानन्द को अपना गुरू और आर्य समाज को अपनी कर्मस्थली मानते थे। वे पाखण्ड, अन्धविश्वास और कुरीतियों का प्रबल विरोध करते थे। उन्होंने जीवन में अनेकों कष्ट सहे। आज उनके परिश्रम से सुन्दरनगर कालौनी और महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहड़ी सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं। वे माता–पिता और बुजुर्गों की शक्ति और सामर्थ्य से सेवा करने पर विशेष बल देते थे। जब उनसे किसी मनचले ने यह प्रश्न किया कि आप माता की सेवा को महत्व देते हो लेकिन स्वामी दयाननंद तो अपनी माता को रोता–विलखता छोड़ सन्यासी हो गये थे। उन्होंने अपने पिता के साथ जब सिद्धपुर के मेले में उन्हें भगवां वस्त्र में देखा तो स्वामी जी ने अपने अपराध के लिये क्षमा याचना करते हुये उनके साथ घर जाने का प्रस्ताव रखा। लेकिन वे तब भी पहरेदारों की आंखों में धूल झौंक कर रात्रि के निबिड़ अन्धकार में पेड़ पर चढ़ गये और फिर कभी भी पिता से न मिले। इससे स्वामी जी की कौन सी मातृ देवो भव, पितृ देवा भव की बात पूरी हुई ? अपने जीवनकाल में पुत्र वियोग में ऋषि दयानन्द के माता–पिता तड़पते रहे। यह कौन सा शास्त्र का सार स्वामी जी ने रखा ? क्या यह धर्म है कि माता–पिता के आंसुओं की दीवार तोड़कर संतान अपनी इच्छा पूरी करे, चाहे उसमें कितनी भी भलाई क्यों न छिपी हो ? श्री रामशरण गुलेरिया ने उस बन्धु को उत्तर दिया था–भाई ऋषि दयानन्द का वैराग्य तीव्रतम था। जगतगुरु

www.thearyasamaj.org

शंकराचार्य, महात्मा बुद्ध तथा गुरु नानक आदि विभूतियों की तरह संसार का उपकार करना ही इन विभूतियों का मुख्य धर्म और कर्म रहा। ऋषिवर दयानन्द घर त्यागने के उपरान्त एक बार भी माँ से मिलने नहीं गये। अपनी माता की समृद्ध आर्थिक स्थिति से देव दयानन्द पूर्ण सन्तुष्ट थे। वे उन फकीरों में नहीं थे 'नारी मुई गृह सम्पति नासी, मुण्ड मुण्डाये भये संन्यासी' वे तो संसार के कल्याण हेतु कृत संकल्प थे। उन्होंने सिद्धपुर के मेले में पिता के क्रोध से घर जाने की बात स्वीकार की थी। वे जानते थे कि यदि पिता जी मुझे घर ले गये तो मुझे विवाह की बेड़ियों में बांध देंगे जबकि घर मेरे लिये दीन, दुखियों और दलितों की सेवा करने से वंचित कर देगा। उस व्यक्ति ने मुझे ठीक याद है श्री रामशरण गुलेरिया जी से क्षमा याचना की और यह बात स्वीकार की कि जीते माता–पिता, गुरु और बुजुर्गों की सेवा ही वास्तव में सच्चा श्राद्ध है। आज यदि हम आर्य समाज के दस नियमों को स्वीकार करें तो लड़ाई, झगड़ा और ईर्ष्या–द्वेष की दीवारों का स्वतः ही समूल नाश हो जायेगा और मानव–मानव से प्यार करने लगेगा। पंछी की पीड़ा में श्री हरिकृष्ण प्रेमी जी ने पक्षी को सान्त्वना देते हुये बहुत ही सुन्दर शब्दों में विचार व्यक्त किये जो आज के परिवेश में युक्तियुक्त और तर्क संगत हैं। कवि ने कहा :

सच है दुनियाँ जलती हिंसा की ज्वाला में,
भेद नहीं है आज सांप में और गले की वरमाला में,
नित्य नये शस्त्रास्त्र बन रहे, है भयभीत सभ्यता सारी
पंछी आज तुम पर ही क्या आज विश्व में विपदा भारी,
पर यह तो कृत्रिम उवाल है इसका दौरा चल न सकेगा,
हिम्मत मत हारो, यह जग प्रेम पन्थ की ओर मुडेगा।

–कृष्ण चन्द आर्य

"सत्यार्थ प्रकाश"

♦सात्विक भटनागर (संग्रहकर्ता) नगरोटा बगवां (हि. प्र.)

यह ग्रंथ समुल्लासो अर्थात् चौदह विभागों में विभक्त है– १० समुल्लास + ४ समुल्लास।

१. प्रथम समुल्लास में ईश्वर के ओंकार आदि नामों की व्याख्या।
२. द्वितीय समुल्लास में संतानों की शिक्षा।
३. तृतीय समुल्लास में ब्रह्मचर्य पठन–पाठन सत्यासत्य ग्रंथों के नाम एवं पढ़ने–पढ़ाने की रीति।
४. चतुर्थ समुल्लास में विवाह एवं गृहाश्रम का व्यवहार।
५. पञ्चम समुल्लास में वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम विधि।
६. छठे समुल्लास में राजधर्म।
७. सप्तम् समुल्लास में वेदेश्वर विषय।
८. अष्टम समुल्लास जगत की उत्पत्ति स्थिति, प्रलय।
९. नवम् समुल्लास में विद्या, अविद्या, वन्ध और मोक्ष की व्याख्या।
१०. दशवें समुल्लास में आचार, अनाचार, भक्ष्य, अभक्ष्य विषय।
११. एकादश समुल्लास में आर्य्यावर्तीय मतमतान्तर के खण्डन–मण्डन विषय।
१२. द्वादश समुल्लास में चारवाक, बौद्ध और जैन मत का विषय।
१३. त्रयोदश समुल्लास में इसाई मत का विषय।
१४. चौदहवें समुल्लास में मुस्लमानों के मत का विषय और चौदह समुल्लासों के अंत में आर्यों के सिद्धांत वेद विहित मत की विशेषतः व्याख्या लिखी है।

सत्य जो जैसा है, उसको वैसा मानना, सत्य कहलाता है।

"धर्म का पालन"

♦दीपक कायस्था, नगरोटा बगवां

मनुष्य को एक ही वस्तु है जो जीवन में विजयी बनाती है और वह है धर्म। धर्म के रथ पर चढ़कर जीवन रूपी युद्ध लड़ा जाता है। साहस व मानसिक शक्ति इस धर्म रथ के दो पहिए हैं जिन पर यह आगे बढ़ता है। सत्य व न्याय इस धर्म रथ की विजयी पताका है जो हमेशा ऊपर लहराती है। बुद्धि, ज्ञान, पराक्रम, इन्द्रियों का नियन्त्रण एवं उदारता इस धर्म रथ के घोड़े हैं। संयम एवं क्षमा इस रथ की लगाम हैं।

इस धर्म रथ को हमेशा कई तरह की बाधाओं व कठिनाईयों से गुजरना पड़ता है। इस रथ को हमेशा अंहकार, क्रोध, लोभ, मोह व काम रूपी वाणों का सामना करना पड़ता है। और इसीलिए इस रथ को बढ़ाने के लिए कुछ शास्त्रों की जरूरत होती है। ईश्वर पर पूर्ण विश्वास व समर्पण ही इसे आगे बढ़ाता है। सन्तोष तलवार का काम करता है तथा मोह से दूरी (Detachment) ढाल का काम करती है। मन की एकाग्रता धनुष का तथा पांच यम (सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, चोरी न करना, जरुरत से ज्यादा धन इत्यादि संग्रह न करना) एवं पांच नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर समर्पण) वाणों का काम करते हैं।

इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह हमेशा इन शास्त्रों से सुसज्जित रहे ताकि धर्म रूपी रथ स्वाभिमान तथा बिना किसी रूकावट के आगे बढ़ता रहे तथा विजयी बने। क्योंकि "यतो धर्मस्य ततो जयः।" अर्थात् जहाँ धर्म वहीं विजय है।

www.thearyasamaj.org

"आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश"

दिनांक : १५.८.२०१३

आदरणीय महोदय,

सादर प्रणाम।

विषय : आर्य समाज संगठन।

स्वतंत्रता दिवस पर आप सब को बहुत–बहुत बधाई। हमारे गुरु देव दयानन्द हर दिशा में संसार के मार्गदर्शक थे। स्वतंत्रता का आन्दोलन व लड़ाई सफलापूर्वक चलाई। इसी दिन अब आर्य समाज संगठन को बचाए रखने के आन्दोलन का यह महत्त्वपूर्ण पत्र।

अहम्, आपसी मतभेद, आरोप–प्रत्यारोपों व न्यायालयों में झगड़ते रहने से आर्य समाज की छवि निरंतर धूमिल हुई है। सदस्यता करोड़ों की अपेक्षा अंगुलियों पर गिनी जा सकती है और साप्ताहिक सत्संग में संख्या न के बराबर रह गई है। संगठन तो शिथिल हुआ ही है –सम्पत्ति का दुरूपयोग स्वाभाविक है। आर्य समाज व प्रत्येक आर्य संगठन की शिथिलता का जिम्मेदार शिरोमणी सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेताओं को लोग समझते हैं जो सम्भवतया अक्षरशः सही लगता है। हमें देव दयानन्द व उनके लाखों अनुयायियों, जिन्होंने तन–मन–धन से आर्य समाज को सींचा व संजोकर रखा और करोड़ों अनुयायी बनाए तथा स्थान–स्थान पर संगठन को स्थापित किया, ने किसी को यह हक नहीं दिया कि इस पवित्र संस्था को इतनी क्षति पहुंचाएं कि वह टूटने के कगार पर हो जाए। अतः हम अपनी आत्मा से पूछें कि संस्था के साथ हम कितना न्याय कर रहे हैं ?

मैंने आठ वर्ष पूर्व दिनांक ०६.०८.२००५ को जब मैं हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा का महामंत्री था, सभी आर्य नेताओं, आर्य विद्वानों, संन्यासियों को उपरोक्त विषय पर आपस में बैठकर खुला चिन्तन कर समाधान निकालने और आपसी विचारों का आदान–प्रदान करके एक नेता, एक लक्ष्य, एक आर्य समाज, एक सार्वदेशिक सभा की भावना को साकार करके महर्षि दयानन्द के सपनों को पूरा करने की दिशा में पहला कदम खुद को बढ़ाने के सम्बन्ध में निवेदन किया था। प्रसन्नता की बात है कि इस का अधिकांश आर्य विद्वानों, सन्यासियों, प्रान्तीय सभाओं और शिरोमणी सभा के सभी पक्षों के शिरोमणी नेताओं ने उदार ह्रदय से स्वागत किया था और उनके पत्रों द्वारा यह साफ आभास मिला था कि सभी पक्ष स्वस्थ वातावरण में बैठने को तैयार हैं।

सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभाएं समानान्तर बन चुकी थी। प्रदेशों में आर्य प्रतिनिधि सभाएं भी पैरलल बनाई जा चुकी थीं और प्रादेशिक सभाएं सार्वदेशिक सभाओं के गुटों के साथ जुड़ चुकी थीं। न्यायालयों में मामले लम्बित पड़े थे। आर्य समाज संगठन खंडित हो रहा था। अतः मेरे पत्र पर बने विचारों का असर ढीला हो गया जो फोन पर बातचीत के दौरान स्पष्ट दिखाई दिया। हमारा निर्णय किसी भी पक्ष के साथ न जाने व तटस्थ रहने का बना जब तक सार्वदेशिक सभा अपने पहले स्वरूप में नहीं आ जाती।

एक और पत्र दिनांक १२.०६.२००६ को सभी महानुभावों को पुनः लिखा और देवदयानन्द की दुहाई देते हुए कहा कि आर्य समाज का मिशन शिथिल हो गया है और यदि विघटन की इस प्रक्रिया को रोका नहीं गया तो आर्य समाज का विशाल संगठन तितर–बितर हो जाएगा और महर्षि दयानन्द व आर्य महापुरूषों के तप से अर्जित सम्पत्ति लोगों की जागीर बन जाएगी। सार्वदेशिक की कमाण्ड अन्ततः आप शिरोमणी आर्यनेताओं के पास ही रहनी है–आर्य समाजों ने तो अपने दायरे में ही कार्य करना है और निर्देशों का पालन करना है। एकता से स्थानीय समाजों को गतिशील बनाने में उन्हें बड़ा बल मिलेगा। आर्य समाज का विशाल संगठन अब अपने शुरूआती स्वरूप पर पहुंच गया है जब देवदयानन्द अकेले थे और उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ी और कई बार जहर भी पीना पड़ा। अब और देर न करें–कहीं संगठन टूटने के कगार पर न आ जाए। इसके जिम्मेदार हमारे केन्द्र के नेता ही होंगे।

महत्त्वपूर्ण :

पुनः निवेदन है कि संसार को हम दिखा दें कि हम महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी हैं, सच्चे आर्य हैं। सभी आर्य समाज का हित चाहते हैं तो असहयोग किस बात का ? आओ स्वयं कदम बढ़ाएं। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का प्रधान होने के नाते आश्वस्त करता हूँ कि हिमाचल का प्रत्येक आर्य इस कार्य में आपके साथ है और इस विवाद को सुलझाने में हर प्रकार से समर्पित है। यह कार्य हमारा है, हम आपके हैं और हम इस कार्य को करेंगे। हिमाचल का प्रत्येक आर्य बहुत चिन्तित है और उन्होंने यह प्रस्ताव पारित किया कि हम एकता के लिए पुनः कदम उठाएं।

आदर सहित, उत्तर की प्रतीक्षा में!

भवदीय,

सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता, प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा (हि. प्र.)

www.thearyasamaj.org

''आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश''

सेवा में, २७.८.२०१३

१. सभी माननीय कार्यकारिणी व अन्तरंग सदस्य

२. सभी प्रधान जी/मंत्री जी, आर्य समाज (हि. प्र.)

विषय : आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक सुन्दरनगर खरीहड़ी आर्य समाज में दिनांक ०८.०६.२०१३

सादर नमस्ते!

पुनः निवेदन है कि यह बैठक बड़ी महत्वपूर्ण है और आप सभी ने बैठक में कृपया उपस्थित होना है। कृपया—

१) निस्वार्थ भाव से, आर्यसमाज की समर्पित भाव से एजैण्डा आईटम्स पर Homework करके आएं, परिपक्व विचार आएंगे व समय भी बचेगा।

२) अपनी समाज से सम्बन्धित हर प्रकार की सूचनाएं—सदस्य संख्या, भवन, आर्थिक स्थिति, साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति, लोकल पापूलेशन कितनी है और आज से पूर्व सदस्य संख्या कैसी रही, वार्षिक उत्सव, कोई प्रकल्प, गौशाला, स्कूल, गुरुकुल, अनाथाश्रम आदि आदि।

३) आर्यसमाज को गतिशील बनाने के सम्बन्ध में अपने विचार बतलाते समय का भी ध्यान रखें लोगों को संस्था से जोड़ना है व उन में छा जाना है।

उपस्थिति आवश्यक है, आदर सहित

भवदीय,

सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता, प्रधान

आर्य समाज सुन्दरनगर (खरीहड़ी) का वार्षिक सम्मेलन

आर्य समाज सुन्दरनगर (खरीहड़ी) का वार्षिक सम्मेलन बुधवार, १८ से शुक्रवार २० सितम्बर २०१३ तक आर्य समाज परिसर में हर वर्ष की भांति श्रद्धा और हर्षोल्लास से मनाया जाएगा। इस अवसर पर दयानन्द मठ घण्डराँ, तहसील इन्दौरा के संचालक स्वामी सन्तोषानन्द जी के प्रवचन एवं भजन के अतिरिक्त हिमाचल के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वीरी सिंह आर्य जी सुमधुर, मनोहर भजनों की अमृतवर्षा करेंगे। अतः सभी प्रभु प्रेमियों से प्रार्थना है कि सत्संग में पधार कर अपनी उपस्थिति से कृतार्थ करें। बुधवार १८ सितम्बर को प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ एवं सांय ५ से ७ बजे तक भजन प्रवचन, वीरवार, १६ सितम्बर २०१३ को प्रातः ८ से १० बजे तक गायत्री यज्ञ, सांय ३.३० से ७ बजे तक महिला सम्मेलन, शुक्रवार, २० सितम्बर २०१३ को प्रातः ८ से ६ बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति, प्रातः ६ से १०.३० बजे तक भजन, प्रवचन एवं प्रातः १०.३० बजे से शान्ति पाठ, तदोपरांत दोपहर २ बजे से ऋषि लंगर का आयोजन होगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—सरला गौड़, सचिव, आर्य समाज, खरीहड़ी

श्री देव जी अब स्वस्थ

श्री इन्द्रजित देव एक लेखक, मीमांसक वेदों के विद्वान् अचानक बिहार से प्रचार—कार्य से वापिस आती बार उदर—शूल के शिकार हो गये। उन्हें तुरन्त चिकित्सालय पहुंचाया गया तथा डाक्टरों की टीम ने इनका आप्रेशन किया। लगातार चार दिन तक श्री इन्द्रजित मूर्छित रहे। पांचवे दिन उन्हें होश आई। यद्यपि डाक्टरों द्वारा उन्हें पूर्ण विश्राम करने का परामर्श दिया है। जिसके अनुसार उन्होंने अगले कार्यक्रमों में भाग लेने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया है।

श्री इन्द्रजित देव ही एक ऐसी विभूति हैं, जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन से सुन्दरनगर कालौनी में आर्य समाज की स्थापना हुई। सुन्दरनगर कालौनी में श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर और गुरुद्वारे का निर्माण कार्य जोरों से चल था। वहाँ सत्संग में भी लोग भारी संख्या में उपस्थित होते थे लेकिन आर्य समाज का सत्संग एक सत्संग प्रेमी और ऋषिवर दयानन्द के भक्त लाला शंकरदास जी के गृह में होता था। शिवरात्रि समारोह के समय हमने सत्संग करने की प्राचार्य श्री रैणा जी से अनुमति लेनी थी। हिमाचल के वन मन्त्री और स्वतन्त्रता सेनानी पं. पदम देव, बल्ह के गांधी चौधरी पीरू राम और वैद्य लक्ष्मी दत्त विधायक समारोह में पधारे थे। चलती बार श्री इन्द्रजित देव जी ने मुझे कहा कि मन्त्री महोदय से आर्य समाज को स्थान न देने की लिये बात कर ली जाए। मैंने पं. पदमदेव जी से आर्य समाज को स्थान न देने की मुख्य अभियन्ता की शिकायत कर दी। पं. पदमदेव जी ने उसी समय चीफ इंजीनियर की कोठी में जाकर मुख्य अभियन्ता की अनुपस्थिति में उनकी पत्नी को आर्य समाज निर्माण हेतु भूमि स्वीकृत करने को कहा परिणाम स्वरूप दूसरे दिन आर्य समाज को स्थान मिल गया जिसका सारा श्रेय श्री इन्द्रजित देव को जाता है। आर्य समाज के लिये श्रीमति सत्यप्रिया जी की प्रेरणा से और स्वामी सुमेधानन्द, लाला धर्मदास स्वतन्त्रता सेनानी तथा सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री बिमल विद्यवन जी की उपस्थिति में स्थापना हुई इन दोनों स्थानों पर दो आर्य समाज कार्यरत्त हैं। जिसका श्रेय श्री इन्द्रजित देव जी और श्रीमती कमला सत्य प्रिया जो अब साध्वी हो गई हैं को जाता है। इन्होंने अपनी माता जी की ओर से पांच हजार रुपये आर्य समाज के निर्माण हेतु दान दिलाये। हम उनके भी हृदय से आभारी हैं। ईश्वर इन दोनों विभूतियों को दीर्घायु प्रदान करे ताकि वे देव दयानंद के सिद्धांतों का प्रचार—प्रसार करते रहें।

—सम्पादक

www.thearyasamaj.org

'महात्मा हंसराज'

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

डी. ए. वी. संस्थाओं का इतिहास महात्मा हंसराज की जानकारी के बिना अधूरा माना जाता है। वह आर्य समाज के गौरवमय पुत्रों में से एक थे तथा डी. ए. वी. संस्था के आधार स्तम्भ थे।

महात्मा हंसराज का जन्म १९ अप्रैल, १८६४ को जिला होशियारपुर के गांव बजवाड़ा में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही हुई। पांचवी पास करने पर उच्च शिक्षा के लिये होशियारपुर के स्कूल में प्रवेश लिया। वह स्कूल पैदल जाते थे। पांव में जूता नहीं होता था। तपती दोपहरी में पांव जल उठते। वह अपनी लकड़ी की तख्ती को पांव के नीचे रखकर खड़े हो जाते, जलन कम होने पर फिर बढ़ते। इस से ही पता चलता है कि उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने के लिये कितना संघर्ष किया। वह आर्यसमाजी कैसे बने यह तथ्य भी रोचकता के बिना नहीं है। उन्होंने संस्कृत दूसरी भाषा के रूप में ले रखी थी। स्कूल में संस्कृत पढ़ने वालों तथा हिन्दु धर्म का मज़ाक उड़ाया जाता था। वे हिन्दु धर्म के बारे बहुत सी शंकायें उठाते। इन शंकाओं के समाधान के लिये वह आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में जाने लगे। आर्य समाज के विद्वानों के भाषाओं से वह इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने अपना जीवन आर्य समाज को समर्पित कर दिया। यही नहीं, उन्होंने अपने प्रयासों से लाला लाजपतराये को भी आर्य समाज की ओर आकृष्ट किया।

लाहौर में ८ नवम्बर, १८८३ को स्वामी दयानन्द के निधन पर एक श्रद्धांजली सभा आयोजित की गई। स्वामी जी ने ३० अक्तूबर, १८८३ को अजमेर में महाप्रयाण किया था। उक्त सभा में स्वामी जी की स्मृति में एंग्लों वैदिक स्कूल तथा कालेज की स्थापना की घोषणा की गई। वहीं महात्मा जी ने बिना वेतन अपनी सेवायें मुख्याध्यापक के रूप में देने की घोषणा की। महात्मा जी अपने शिष्यों को देश भक्त तथा वेद प्रचारक बनने के लिये प्रेरित करते। भगत सिंह उन्हीं के विद्यालय का एक छात्र था जो २३ वर्ष की आयु में अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण फांसी पर झूल गया। उन के विद्यालय से और भी कई विशिष्ट व्यक्ति निकले जिन्होंने राष्ट्र की बलिवेदी पर अपनी आहुति दी। वह आदर्श अध्यापक तथा कुशल प्रशासक थे। उन के कार्य तथा समर्पण को देख १८९० ई. में आर्य जगत् ने उन्हें महात्मा की उपाधि से विभूषित किया।

वह १८९९ ई. में राजस्थान में अकाल तथा १९०५ ई. में कांगड़ा में भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिये आगे आये। पंजाब की जनता ने उन्हें इस काम के लिये दिल खोलकर दान दिया। कांगड़ा जिला के आर्य समाज आज भी उन के प्रेरणामय कार्य की याद दिलाते हैं। आर्य समाज भवनों का निमार्ण उन्हीं दिनों में हुआ।

इस के अतिरिक्त महात्मा जी ने अवध, देहली, रावलपिंडी और लाहौर के प्लेग महामारी में भी विशेष सेवा कार्य किया। राजस्थान के भीलों को ईसाई बनने से बचाया तथा अकाल में उन की वस्त्र तथा अन्न भेज कर सहायता की। वह बाढ़ पीड़ितों की सहायता में भी अग्रणी रहते थे। उन्होंने अपने बेटे बलराज की देश के लिये आहुति भी दी थी।

डी. ए. वी. संस्था भले ही आज अपने लक्ष्य से भटक गई है। वेद प्रचार के स्थान पर यह संस्था धन उपार्जन में लगी हैं। परन्तु शिक्षा प्रसार में डी. ए. वी. आज भी विशिष्ट भूमिका निभा रहा है।

महात्मा हंस राज जी स्वभाव से सरल थे। वह सादगी के उदाहरण थे। वह खद्दर का कुर्ता पाजामा तथा बन्द गले का कोट, सिर पर पगड़ी और पैरों में देसी जूती पहनते थे। उन्होंने सन् १८८६ से १९१२ ई. तक अवैतनिक कार्य किया। वह अपना तथा परिवार का खर्च अपने बड़े भाई मुलक राज द्वारा भेजे गये मासिक ₹ ४० से चलाया करते थे।

महात्मा जी रविवार के दिन, आर्य प्रादेशिक सभा के द्वारा संचालित समाजों में जाकर व्याख्यान दिया करते थे। वह आर्यसमाज अनारकली लाहौर के सदस्य थे। उन दिनों डी. ए. वी. के सभी छात्र और अध्यापक आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में आते थे। वह नगर कीर्तन में अपने विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के साथ सम्मिलित होते थे। आर्य समाज के स्वर्णिम युग के निर्माताओं में महात्मा जी अग्रगण्य थे।

महात्मा हंस राज जी के जीवन के दो प्रेरक प्रसंग :–

१. महात्मा हंस राज जी के पिता की मृत्यु हो गई थी जब वह १२ वर्ष के ही थे। भाई एक डाकघर में कार्य करते थे अपना आधा वेतन ₹ ४० इन्हें भेजा करते थे। भाई ने कुछ समय धन देना बन्द कर दिया। उनके पास केवल छः आने थे। उन्होंने भुने चने खरीदे और परिवार को उसे खाकर निवार्ह करने के लिये कहा। भाई ने फिर धन देना आरम्भ कर दिया।

२. प्राचार्य के रूप में महात्मा जी बड़े समय पालक थे। एक दिन विद्यालय जाने का समय हो गया और मूसलाधार वर्षा आरम्भ हो गई। उन के पास न छाता था और न तांगे पर जाने के लिये पैसे। अतः वह वर्षा में ही निकल पड़े और समय से २ मिनट पहले विद्यालय में थे।

७४ वर्ष की आयु में १५ नवम्बर, १९३८ को यह महा मानव चिरनिद्रा में विलीन हो गया।

www.thearyasamaj.org

"क्या आर्य समाजों के अधिकारी इस ओर ध्यान देंगे ?"

♦रामफल सिंह आर्य, प्रान्तीय संचालक आर्यवीर दल (हि. प्र.)

मेरे समक्ष राजस्थान के जयपुर से प्रकाशित होने वाली पाक्षिक आर्यनीति के अंक २८६ (जून, २०१३) की प्रति खुली पड़ी है जिसमें माननीय श्री सत्यव्रत सामवेदी का सामयिक अग्रलेख "अब युवा पीढ़ी को कार्यभार सोंपो बुजुर्ग लोग मार्गदर्शक और सहायक बनें" प्रकाशित हुआ है। लेख को गम्भीरता से पढ़ा और अनुभव किया कि श्री सामवेदी जी ने बड़ी मार्मिक एवं पते की बात लिखी है। उनके लेख के कुछ अंश मैं यहां पर उद्धृत कर रहा हूं। कृपया पाठकगण तनिक अवलोकन करें और विचारें।

"सभा के गत चुनावों के बाद मैं निरन्तर यह आग्रह करता आ रहा हूं कि अब प्रतिनिधि सभा का कार्यभार नई पीढ़ी को सौंपा जाये। यदि हमने अपने सामने नई पीढ़ी को तैयार नहीं किया तो आर्य समाज का क्या भविष्य होगा हम मृत्यु पर्यन्त पदों से क्यों चिपके रहना चाहते हैं ? मैनें यह प्रस्ताव रखा कि ६० वर्ष से ऊपर के सदस्यों को चुनावी दंगल से अलग हो जाना चाहिये और वरिष्ठ सभा का गठन हो, जो स्थायी हो और अंतरंग सभा को सहयोग दे। इस विचार मन्थन में यह आशंका प्रकट की गई कि नई पीढ़ी के पास समय नहीं है। नई पीढ़ी अपने भविष्य के लिये चिन्तित है। उसे अपने कार्यो से फुर्सत नहीं है। मैंने उत्तर दिया कि जब उनके गले में जुआ डाला जायेगा तो वे कुछ न कुछ तो करेंगे ही और आर्थिक सहयोग भी देंगे।"

श्री सामवेदी के विचार हम सभी के लिये विचारणीय हैं। आज आर्य समाज केवल बूढ़ों की समाजें बन कर रह गई हैं। हम नई पीढ़ी के न जुड़ने का राग तो अलापते रहते हैं परन्तु उसे जोड़ने का न तो कोई ठोस कार्य करते हैं और न ही उन्हें आगे आने देते हैं। जब हम किसी को कार्य की जिम्मेदारी देने को ही तैयार नहीं तो आगे आयेगा कौन ? वास्तविक बात तो यह है कि कई वर्षो तक जब हम पद पर रह जाते हैं, तो प्रायः अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति हेतु हमारे अन्दर एक लालसा एक प्यास जाग उठती है। हमें आदत सी हो जाती हैं मान एवं प्रतिष्ठा की। जबकि यह मानव मन की एक अत्यन्त क्षुद्र वृति है। फिर हम कार्य के लिये नहीं अपने अहम् की तुष्टि के लिये कुछ करना चाहते हैं। यह तो सत्य है कि नई पीढ़ी की अपनी समस्यायें हैं जो अपने स्थान कर उचित हैं परन्तु यह भी सत्य है कि यदि उनको जिम्मेदारी दी जायेगी तो निश्चित रूप से वे कार्य करेंगे। अंग्रेज़ी की कहावत है– "Changes are always better" अर्थात् बदलाव सदैव भले के लिये होता है। इसमें तर्क वितर्क हो सकते हैं परन्तु हमारा तो मात्र इतना कहना है कि यदि आर्य कार्य करना और करवाना चाहते हैं तो फिर नये लोगों को आगे लाने में झिझकिये मत। साठ साल के पश्चात् जब आपके घर में बहुयें आ जाती हैं, पोते पोती हो जाते हैं तो फिर आपकी सुनता ही कौन है ? उस समय तो बड़ी सरलता से आप आत्म समर्पण करके हथियार डाल देते हैं कि चलो भाई! जैसा आप लोगों की इच्छा हो सो करो। फिर आर्य समाजें एवं सभाओं में पदों के लिये यह युद्ध क्यों ? शरीर अकड़ गया, चला फिरा भी नहीं जाता, ठीक से दिखाई व सुनाई भी नहीं देता, कोई भाग दौड़ कर नहीं सकते, अकेले कहीं आना जाना भी कठिन है फिर भी पद का मोह नहीं छूटता। युवाओं पर यह आरोप तो लगाते हैं कि उन्हें समय नहीं मिलता, कार्य कैसे करेंगे परन्तु मैं पूछता हूँ कि आपके पास तो समय है, आप कितना समय आर्य समाज के कार्यों के लिए देते है। कृपया समय एवं स्थिति की गम्भीरता को समझें और युवाओं को आगे आने दें। आपकी छत्रछाया में, आपके निर्देशन में उन्हें कार्य करने का अवसर प्रदान करें और अपनी आंखों के सामने अपनी इस बगिया को फलता–फूलता देखें। यह भी सत्य है कि बिना वृद्धों के आशीर्वाद के कोई भी कार्य सफल, सिद्ध नहीं होता तो युवाओं को भी चाहिये कि वे उनकी उपेक्षा करके नहीं, अवहेलना करके नहीं उनके चरणों में बैठ कर उनके अनुभव से लाभ उठा कर कार्य करें। उन्होंने अपने जीवन के सुनहरे पल आर्य समाज के निर्माण व उत्थान में लगाये हैं, उन्हें आदर सम्मान देना आपका परम कर्त्तव्य है अतः बुजुगों के मार्ग निर्देशन में ही कार्य करना उचित होगा। हे बुर्जुगो! सोचो! जब आपके सामने आपका यह बागीचा फले, फूलेगा, बढ़ेगा तो क्या आपको हार्दिक प्रसन्नता नहीं होगी ? आओ! वृद्धों को जवानी के सिर पर ताज रखने दो और जवानी को बुढ़ापे को सिर पर उठाने दो। देखना समाज का कायापलट हो जायेगा।

"बैठक सूचना"

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की साधारण सभा की बैठक ८.६.२०१३ रविवार को आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग (खरीहड़ी) डा. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) में ११ बजे होनी निश्चित हुई है। जिस में विभिन्न विषयों पर चर्चा होगी तथा निणर्य लिये जायेंगे। सभी सदस्यों से निवेदन है कि समय पर पधार कर बैठक को सफल बनायें। प्रधान श्री सत्य प्रकाश महेन्दी रत्ता जी इस बैठक की अध्यक्षता करेंगे।

–सत्यपाल भटनागर, महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा (हि. प्र.)

www.thearyasamaj.org

'गृहिणी' बन गई दासी' (हिन्दी दिवस १४ सितम्बर)

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

हमारा देश अनेक राज्यों की इकाईयों का संघ है। इस में भिन्न–भिन्न भाषाऐं बोलने वाली अनेक जातियों के लोग रहते हैं, फिर भी हमारा देश एक है, देश की परम्पराऐं एवं संस्कृति एक है किन्तु राष्ट्रीय एकता में सब से बड़ी बाधा भाषा है। भ्रम के कारण दक्षिण के लोग समय–समय पर राष्ट्र–भाषा हिन्दी का विरोध करते हैं। देश में शिक्षा के विस्तार के साथ हिन्दी भाषा सम्पन्न हुई है। हिन्दी वास्तव में भारत की आत्मा का स्तर है। किन्तु हम अपनी भाषा तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति सतर्क नहीं रहे। अंग्रेज़ों ने भाषाओं को धर्म के नाम पर जोड़ने की कूटनीति का सहारा लिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश का विभाजन ही नहीं हुआ अपितु अंग्रेज़ हिन्दी भाषा के साथ जनता के रागात्मक सम्बन्ध तोड़ने में भी सफल हुए। उस ने हमारा उपयोग करने के लिए हमसे काम करवाने के उद्देश्य से हमें अंग्रेज़ी सिखाई और हम सीख गये। देश में अंग्रेज़ी शिक्षा का सूत्रपात १८३६ में लार्ड मैकाले द्वारा किया गया था। उसने साफ शब्दों में कहा, "हमें भारत में एक ऐसी जमात पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए, जो रूप–रंग, रूधिर–मज्जा से भले ही भारतीय रहें लेकिन रहन–सहन आहार–व्यवहार में दिल–दिमाग से पूरी तरह अंग्रेज़ बन जायें। यह जमात हमारे और उन करोड़ों के बीच मध्यस्थ का काम करेगी जिन पर हमें शासन करना है।" मैकाले की सोची समझी चाल के अन्तर्गत हम अंग्रेज़ी तो सीख गये, काले अंग्रेज़ भी बन गये गोरा अंग्रेज़ तो चला गया मगर हमें जो अंग्रेज़ी का भूत लगा है वह हमारा पिंड छोड़ने को तैयार नहीं। सहस्र वर्ष की गुलामी में हम इतने गिर गये कि स्वाभिमान भी भूल गये।

जब कोई जाति अपनी भाषा छोड़कर दूसरों की भाषा में तुतलाने को अपना परम गौरव मानने लगती है तो वह पराधीनता की पराकाष्ठा है क्योंकि जो जाति अपनी भाषा में न सोचती है, न अपना साहित्य लिखती है और न ही अपना दैनिक कार्य सम्पादित करती है वह अपनी परम्परा से छूट जाती है, अपना व्यक्तित्व खो बैठती है। भारत के स्वतन्त्र होते ही भाषा विषयक महाक्रान्ति की अग्नि शीतल पड़ती गई। अंग्रेजी तो 'गृहिणी' बन गई और बेचारी हिन्दी अपने ही घर में 'दासी' होकर रह गई। हिन्दी हिन्द में ही बन्दिनी है। प्रति वर्ष १४ सितम्बर को मात्र 'हिन्दी दिवस' मना कर हम इसे सम्मान प्रदान करने की औपचारिकता निभाते हैं। चीन, जापान और जर्मनी में विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा में चिकित्सा और कानून की शिक्षा दी जाती है किन्तु भारत में हिन्दी अपनी मर्जी से कानून और न्याय की भाषा नहीं बन सकती। मुस्लिम शासनकाल में हिन्दी हमारे देश की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आदान प्रदान का एक सशक्त माध्यम थी। सूफी सन्तों और भक्त कवियों ने हिन्दी के माध्यम से सम्पूर्ण देश में सांस्कृतिक समन्वय का प्रशंसनीय योगदान दिया था। इसी लिए अनेकता में एकता का भाव सर्वोपरि बना रहा। गुजरात और बंगाल भारत के दो अग्रणी प्रान्त हैं जिनका नवीन भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बंगाल ने हमें राम मोहन राय, रामकृष्ण और रवीन्द्रनाथ टैगोर दिये तो गुजरात ने महर्षि स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी को उत्पन्न किया। राष्ट्रीयता के अंकुर बंगाल में फूट रहे थे, अतएव यह बात भी सब से पहले बंगालियों की ही समझ में आई कि अंग्रेज़ी को अपदस्थ करना है तो कार्य केवल हिन्दी के द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। देश में हिन्दी का आन्दोलन कैसे–कैसे आगे बढ़ा यह कथा बहुत मनोरंजक है और इस कारण इसका महत्व और भी बढ़ जाता है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव उन महापुरूषों ने किया जिनकी मातृभाषा हिन्दी न होकर बंगला, गुजराती, मराठी या कोई अन्य भाषा थी। गुजराती होते हुए भी महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ–प्रकाश' नामक युग प्रवर्तक ग्रन्थ हिन्दी में लिखा। भारत में जितनी भाषाऐं हैं उन सब का सांस्कृतिक ध्येय एक है अर्थात् वे एक ही भावना को रूप दे रही हैं तथा सब एक ही घाट पर पानी पीकर जी रही हैं जो वेदों और उपनिषदों का घाट है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में जो सम्मान मिलना चाहिए था वह हम अंग्रेज़ी भाषा के कारण नहीं दे पाए। हिन्दी जन–जन की बोलचाल की भाषा है। हिन्दी व्यवहार की भाषा है। कार से लेकर सब्ज़ी तक हिन्दी बोलकर ही बेची और खरीदी जाती है। धर्म, अध्यात्म और नैतिकता की शिक्षा हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओं में ही दी जा रही है न कि अंग्रेज़ी में। भारत भर का मनोरंजन हिन्दी में हो रहा है। गीत, संगीत, नाटक, सिनेमा, टी.वी. धारावाहिक सब तरफ हिन्दी ही हिन्दी। आज भारतवर्ष में अंग्रेज़ी के माध्यम से शासन इसलिए चलाया जा रहा है क्योंकि सभी प्रान्त हिन्दी के लिए सहमत नहीं हैं, इसलिए हिन्दी राजभाषा नहीं बनेगी। यह कुटिल चाल है। जिस पराधीनता की जंजीर को हमने ६६ वर्ष पूर्व काट डाला था वह हमारी शारीरिक दासता की जंज़ीर थी। हमने पराधीनता के बन्धन तो तोड़ दिये किन्तु अंग्रेज़ीयत प्रभाव से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सके। ६ अगस्त, २०१३ की घटना है मध्यप्रदेश के दमोह जिले में अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूल 'सेंट जॉन' की तीसरी कक्षा की छात्रा मानसी को हिन्दी बोलने पर सज़ा मिली। शिक्षक ने

www.thearyasamaj.org

मानसी को इसलिए पीट डाला कि वह स्कूल में अपने साथियों से हिन्दी में वार्तालाप कर रही थी। उसे हिन्दी बोलते देख शिक्षक ने कक्षा में ही उस की पिटाई कर दी। मामला जिला अधिकारी के पास पहुंचा तो उन्होंने जांच के आदेश दे दिये। वहीं पुलिस थाने में भी शिकायत दर्ज कराई गई। यहाँ हिमाचल में भी अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में स्कूल परिसर में हिन्दी बोलने पर प्रतिबन्ध है। यदि कोई विद्यार्थी हिन्दी में बात करते पकड़ा जाता है तो उसे जुर्माना किया जाता है। अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में पढ़ने वाले उच्च कक्षाओं के छात्र सत्रह, चवालीस, अडसठ या कोई भी संख्या बोली जाने पर प्रायः पूछते देखे जाते हैं कि यह फिगर कितना हुआ प्लीस इंगलिश में बताओ ना। मातृभाषाओं में पढ़ने वाले छात्र अंग्रेज़ी अंकों को भली भान्ति जानते हैं। जैसे फोटिफोर, एटिसेवन, थर्टीनाइन को तुरन्त समझते हैं। मैकाले को अपने मिशन में कितनी सफलता मिली यह आज सब के सामने है।

हिन्दी राष्ट्र की असीम शक्ति, मौलिकता एवं राष्ट्रीय एकता का प्रतिनिधित्व करती है। अतः आवश्यक है कि संकीर्ण मतभेदों से ऊपर उठकर हम महान लक्ष्यों एवं एकता के मार्ग पर चलें। हिन्दी मात्र हमारी राष्ट्र भाषा ही नहीं अपितु देश की मिट्टी से जुड़ी जन–जन की भाषा है। हमें भारतेन्दू हरिश्चन्द्र ने चेताया भी है :

"निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"

"प्रभु-साथी"

♦मिलाप चन्द, आर्यसमाज नगरोटा बगवां

प्रभु सबका साथी है, गरीब का भी साथी है
अमीर का भी साथी है
नर–नारी दोनों का केवल प्रभु ही साथी है।
यदि कोई शुभ कार्य करो तो प्रभु के अर्पण कर दो।
प्रभु की किताब में अच्छे बुरे का हिसाब है।
अच्छे कर्म करता जा प्रभु को याद करता जा।
सफलता ही सफलता मिलती जाएगी।
पूरी लग्न से, मन को लगाकर कर्म कर
सफलता मिलती जाएगी।
प्रभु दिव्य आंख से देख रहा है
पूरा–पूरा हिसाब कर रहा है।
किसी के साथ भेद–भाव न कर
तेरे सभी कर्मों का, शुभ और अशुभ कर्म।
भगवान की पुस्तक में लिखा जाएगा।
कल–कल मत कर, कल किस ने देखा है ?
"मिलापचन्द" काल सिर पर मंडरा रहा है
शुभ कर्म कर बेड़ा पार हो जाएगा।

'बेटा-बेटी एक समान, हे! कलियुग के इन्सान!'

♦श्री खेमचन्द ठाकुर सेवानिवृत प्रा. शिक्षा अधिकारी
गांव व डा. नागचला, जिला मण्डी (हि. प्र.)

१४ अगस्त, २०१३ को हिमाचल प्रदेश हिम खण्ड साहित्य परिषद् खण्ड विकास अधिकारी कार्यालय सुन्दरनगर में अयोजित कवि सम्मेलन में खेम चन्द ठाकुर सेवानिवृत प्रारिम्भक शिक्षा अधिकारी गांव व डा. नागचला जिला मण्डी ने कविता की प्रस्तुति दी :–

कन्या की आत्मा बयां कर रही है।

बेटा–बेटी एक समान, कब समझेगा तू इन्सान,
बेटों को खुला छोड़ दिया, बेटी पर है क्यों लगाम ?
ईश्वर ने दोनों को एक कोख का नाम दिया,
पर तूने इन्सान भेद करके कैसा काम किया।।
बेटा–बेटी एक समान कब तू समझेगा इन्सान,
ओ माँ! ओ माँ, तू क्यों हुई हत्यारी।
क्यों आपने–अपनी बेटी कोख में मारी।।
पापा! पापा! तुम छोड़ देना पूजा,
तुम्हारे जैसा पापी न होगा दूजा।।
कन्या की रुह कहती है डॉक्टर से,–
डॉक्टर तुम्हें भी दया नहीं आई,
अब न रहा तू डॉक्टर, बन गया कसाई।।
हे इन्सान बना अपनी सोच महान्,
भगवान ने बनाये बेटी–बेटा एक सम्मान।।
बेटी नहीं, वह परी है,
जिससे तेरी बगिया भरी है।
संकल्प : आओ हम कसम खायें,
जिस घर बेटी वहाँ व्याहें बेटी।
क्यों बेटों की नगरी में भैया
बेटी जी न पायेगी।।
आखिर एक दिन, फिर वह भी,
अपनी कोख गंवाएगी।।
आज भी हिमाचल की बेटी, कुमारी कविता ने,
कोरिया में घूम मचाई, भारत की शान बढ़ाई,
बेटा–बेटी एक समान, कब तू समझेगा इंसान।।

"श्रावणी पर्व एवं वार्षिक उत्सव"

♦मिलाप चन्द आर्यसमाज नगरोटा बगवां (हि. प्र.)

आर्य समाज नगरोटा बगवां ने अपना वार्षिक उत्सव एवं श्रावणी पर्व २१ अगस्त २०१३ से २५ अगस्त २०१३ तक मनाया। सभी श्रद्धालुओं ने अपूर्व श्रद्धा भक्ति एवं हर्षोल्लास से उत्सव में भाग लिया तथा पुण्य प्राप्त किया।

www.thearyasamaj.org

'गायत्री यज्ञ एवं श्रावणी पर्व'

♦मोहन सिंह, प्रबन्ध सम्पादक

आर्य समाज मण्डी ने २१ अगस्त से २५ अगस्त २०१३ तक गायत्री यज्ञ एवं श्रावणी पर्व अपार श्रद्धा, भक्ति भावना एवं हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से मनाया। २५ अगस्त को पूर्णाहुति के ब्रह्मा श्री शिव नारायण शास्त्री ने वेद मन्त्रों के साथ हवन में श्रद्धालुओं से आहुतियाँ डलवाईं। यज्ञ में यजमान जोड़ों के अतिरिक्त सभी उपस्थित नर–नारी धर्म प्रेमियों ने पूर्णाहुति में भाग लिया। वानप्रस्थी श्री हरीश मुनि जी ने यज्ञ महिमा का गुणगान किया। मंच संचालन श्री हरीश बहल जी ने कुशलता पूर्वक निभाया।

पं. हरिश्चन्द्र आर्य ने अपने सुमधुर भजनों से ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते हुए सभास्थल में उपस्थित आर्यप्रेमियों को निहाल कर दिया।

वेदमन्त्र से श्री गणेश करते हुए उन्होंने ने 'ओ३म्' नाम का गुणगान करने की प्रेरणा प्रदान की :–

ऊँ बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी
मुखमण्डल में पड़ी पड़ी
पूर्ण ब्रह्म करेंगे पूर्ण बाधाऐं सब बड़ी–बड़ी

उन्हों ने बड़े पते की बात बताई, ईश्वर की कृपा हो तभी सत्संग में आने का संयोग बनता है :–

बिनु सत्संग विवेक न होई,
प्रभु कृपा बिनु सुनत न कोई।

ईश वन्दना का भजन सुनाकर सभी श्रोताओं को तालियों के साथ भजन गाने के लिए आर्य जी ने विवश कर दिया:–

दाता तेरे सुमिरन का, वरदान जो मिल जाय
मुरझाई कलि जिन की इक आन में खिल जाय
सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है,
इक बूंद जो मिल जाय, तकदीर बदल जाय।

शिव नारायण शास्त्री जी ने वेद ज्ञान की अमृत वर्षा करते हुए, आज के युग में माता–पिता अपने बच्चों के हितचिन्तक नहीं क्यों कि उन्हें सत्संग में साथ नहीं लाते। ज्ञान की बातें सुनने से उन्हें वंचित कर देते हैं। बच्चों को डाक्टर, इंजीनियर और पायलेट बनाने के साथ–साथ सब से पहले हम उन्हें इन्सान बनाऐं। हमारे बालक बड़े होकर शूरवीर, पराक्रमी और विद्वान् भी बनें इस ओर भी माता–पिता को ध्यान देने की आवश्यकता है। हम राम और कृष्ण की दुहाई तो देते हैं किन्तु उनके गुण–कर्म और स्वभाव का अनुसरण नहीं करते। प्रभु ने हमें देहिक दैविक और भौतिक सुख प्रदान किये हैं। हम उन का दुरूपयोग न करें अन्यथा जो देना जानता है वह लेना भी जानता है। मुन्शी राम अपने माता–पिता का इकलौता बेटा था। सारी सुख सुविधाओं के होते हुए भी बेटा मुंशी राम क्रोधी, कामी, लालची और दुराचारी बन गया। उसके मन में अनेक शंकाऐं थी जिन का निवारण करने वह महर्षि दयानन्द सरस्वती के पास जा पहुंचा। महर्षि ने एक–एक कर उसकी शंकाओं का तर्क सहित निवारण किया। अन्त में मुंशी राम ने महर्षि से पूछा, "मैं कैसे विश्वास कर लूं कि ईश्वर है ?" महर्षि ने कहा, 'मैंने तुम्हें ईश्वर के प्रति विश्वास दिलाने की प्रतिज्ञा नहीं की है। यदि तुम पर प्रभु कृपा होगी तो विश्वास भी हो जायगा।' मात्र इसी बात से मुंशी राम का ह्रदय परिवर्तन हो गया और वह विवेकशील भद्र पुरूष बन गया। शास्त्री जी ने अन्त में लाख टके की बात बताई 'मनुष्य लेन देन या धन सम्पति पा कर नहीं बदलता।' विचारों से जीवन परिवर्तन होता है। उत्तम विचारों से मनुष्य के संकल्प, कर्म, तकदीर और तदवीर बदलती है।' आज कुविचारों के कारण अपहरण, बलात्कार, दुष्कर्म और व्यभिचार हो रहे हैं। अतः दिशा बदलने की आवश्यकता है तभी दशा बदलेगी।

अन्त में आर्य समाज मण्डी के प्रधान श्री सुरेश टण्डन जी ने सभी का धन्यवाद और आभार प्रकट करते हुए कहा कि प्रभु की अपार कृपा से हमारा पांच दिवसीय गायत्री यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। आचार्य शिवनारायण, श्री हरीश मुनि जी, कार्यकारिणी के सभी पदाधिकरियों एवं बाहर से आऐ श्रद्धालुओं का आध्यात्मिक आयोजन में पधारने पर हार्दिक धन्यवाद। अन्त में शान्ति पाठ के उपरान्त सभी ने ऋषि लंगर में सुस्वादु भोजन का आनन्द मनाया।

"आर्य समाज की कार्यकारिणी के सदस्य"

♦ओम प्रकाश महामन्त्री, नगरोटा बगवां, जिला कांगड़ा

श्रीमती सरोज चढ्ढा–प्रधान, वरिष्ठ उपप्रधान श्री दीपक काईस्था, उपप्रधाना–श्रीमती कमलेश नागपाल, महामन्त्री –श्री ओम प्रकाश काईस्था कोषायक्ष–श्री मिलाप चन्द, मार्गदर्शक–श्री राम काईस्था आर्यसमाज प्रतिदिन प्रातः ६ से ७ बजे तक हवन, यज्ञ होता है रविवार प्रातः ८ बजे से ६.३० बजे तक यज्ञ, हवन व सत्संग होता है वार्षिक उत्सव तथा श्रावणी पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। लोगों के घरों में सत्संग की व्यवस्था होती है।

श्री मिलाप चन्द की पत्नी स्व. कमलेश गुप्ता की चतुर्थ वार्षिकी श्री मनोहर लाल आर्य ने वैदिक ढंग से करवाई। जिस की प्रशंसा सभी लोगों ने की। इससे लोगों को प्रेरणा भी मिली।

www.thearyasamaj.org

'श्रद्धा'

♦महात्मा आनन्द स्वामी

ऋग्वेद के दशवें मण्डल के १५१ वें सूक्त में आता है :

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।।

'श्रद्धा से अग्नि है, श्रद्धा से उसमें आहूति डाली जाती है। श्रद्धा ही मुख्य है। श्रद्धा ही आनन्द की चोटी है। हम ऊंची आवाज से कह सकते हैं कि श्रद्धा के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता।' यह है श्रद्धा का महत्त्व! अपने अन्दर श्रद्धा उत्पन्न करो। इसके बिना आत्मोन्नति के मार्ग पर एक पग भी तुम चल नहीं सकोगे। यही नहीं, वेद भगवान् आगे चलकर कहते हैं–

श्रद्धा के बिना न वायु रक्षा करती है, न जल, न अग्नि। श्रद्धा से ही सौभाग्य मिलता है, सुख मिलता है, और चैन मिलता है। (मन्त्र चौथा)

इससे अगले मन्त्र में कहा है–

श्रद्धा को हम प्रातः बुलाते हैं, श्रद्धा को हम दोपहर को बुलाते है, शाम के समय बुलाते हैं, रात के समय बुलाते हैं। हे श्रद्धे! तू ही हमारी सारी कामनाओं को पूर्ण करनेवाली है। (मन्त्र पांचवा)

यह है श्रद्धा की महिमा! परन्तु प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह श्रद्धा बढ़ेगी कैसे ? इसके तीन उपाय हैं– (१) धयान, (२) ज्ञान और (३) अटल विश्वास।

ध्यान क्या है ? इसका उत्तर उस वार्तालाप से मिलता है जो भगवान राम और गुरू वसिष्ठ में हुआ। भगवान राम ने पूछा, "गुरुदेव! इस शरीर को हमें सब–कुछ खिलाते है, आत्मा को क्या खिलायें ?"

भगवान राम ही ऐसा प्रश्न पूछ सकते थे। गुरु वसिष्ठ ही उसका उत्तर दे सकते थे। आजकल तो कोई आत्मा की बात ही नहीं करता; आजकल शरीर ही हमारे समक्ष है। इसको खिलाओ–पिलाओ, इसके लिए कपड़े सिलवाओ, इसके लिए मकान बनवाओ और फिर एक दिन इसे मरघट में ले जाकर छोड़ आओ। यह है इसका परिणाम! कितने लोग प्रतिदिन वहाँ पहुंचते हैं ? कितने व्यक्ति इस बात को याद रखते हैं कि अन्ततः इसे वहाँ जाना है ? कितने लोग समझते हैं कि यह शरीर मैं नहीं हूँ, भिन्न हूँ ?

कई भाई मुझे कहते हैं, "आनन्द स्वामी, हमें अपने साथ रख ले।"

मैं पूछता हूँ, "क्या करोगे साथ रहकर ?

वे कहते हैं, "आनन्द स्वामी की सेवा करेंगे।"

मैं हंसकर कहता हूँ, "भाई, इसकी सेवा तुम क्या करोगे ? इसकी सेवा मैं जैसी करता हूँ, ऐसी तुम नहीं कर सकते। इसे खिलाता हूँ, पिलाता हूँ, नहलाता हूँ, कपड़े पहनाता हूँ, इसे गुसलखाने में भी ले जाता हूँ, तुम क्या इसकी इतनी सेवा कर सकते हो ?"

मैं यह नहीं कहता कि शरीर की रक्षा नहीं करनी चाहिए। करनी चाहिए अवश्य, क्योंकि आत्मा इसके अन्दर है। यही इसका मूल्य है। यह राजा जब चला जाता है, तब इसके झोंपड़े का कोई मूल्य नहीं रहता। तब सब लोग कहते हैं–इसे शीघ्र ले चलो, मरघट में छोड़ आओ।

पिछले वर्ष मैं कैलास की यात्रा के लिए गया था न! भारत से तिब्बत की ओर बढ़े तो बीच में पिस्सुलेक घाटी १६,७५० फ़ीट ऊँची पहाड़ी आती है। इसे पार करके नीचे तिब्बत का चटियल और रेतीला मैदान आता है–सागर के धरातल से १५,००० फ़ीट ऊँचा, इसलिए इसे संसार की छत कहते हैं। २७ दिन इस विस्तृत मैदान में हम घूमते रहे। हर ओर चट्टानें, हर ओर रेत, कोई वृक्ष नहीं, कोई पौधा नहीं। एक दिन मैंने आश्चर्य से अपने गाइड से पूछा, "कीचखम्बा! इस देश में वृक्ष नहीं, लकड़ी भी नहीं, मर जाने पर लोगों को जलाते कैसे हैं ?"

कीचखम्बा ने कहा, " आगे चलकर बताऊंगा।"

आगे गये हम, तो दाई ओर रेत का एक ऊँचा टीला था। कीचखम्बा ने कहा–"यह वह स्थान है जिसे आप पूछते थे। इसे पैरी कहते हैं। तीन पुजारी यहाँ रहते हैं। जब किसी के यहाँ कोई आदमी मर जाता है तो उसके रिश्तेदार उसे यहाँ ले आते हैं। पुजारी मुर्दे को काटकर, छोट–छोटे टुकड़े करके इस टीले पर डाल जाते हैं, तब शंख बजाते हैं। शंख के बजते ही सैकड़ों पक्षी आकर उन टुकड़ों को खाने लगते हैं। कुछ ही समय में सारी लाश समाप्त हो जाती है।"

मैंने उस टीले की ओर देखकर दिल ही दिल में कहा, 'हे भगवान! मुझे तू तिब्बत में मत मारियो! करौलबाग में चलकर मारियो, नहीं तो यहाँ तो मेरा मूर्दा खराब होगा।'

परन्तु, मुर्दा खराब हो या अच्छा, इस शरीर का मूल्य क्या है ? बहुत संभाल के हम इसे रखते हैं, फिर एक दिन मिट्टी में दफ़ना देते हैं, नदी में बहा देते हैं, आग में जला देते हैं या टुकड़े करके पक्षियों के आगे डाल देते हैं कि वे आयें और इसे समाप्त कर दें। इसका मूल्य केवल तब तक है जब तक आत्मा इसके अन्दर है। आत्मा के कारण ही इसका मूल्य है। जिसके कारण इसका मूल्य है उसकी हम कभी चिन्ता नहीं करते। इसके सम्बन्ध में कभी यह भी नहीं सोचा कि आज इसे कुछ खिलाया या नहीं।

याद रक्खो ऐ दुनिया के लोगो! आत्मा यदि भूखी रहेगी

www.thearyasamaj.org

तो कभी कुछ नहीं बनेगा। शरीर को भोजन अवश्य दो। जब तक इसके अन्दर आत्मा है, तब तक इसे भोजन देना आवश्यक है, परन्तु यह मत भूलो कि जिसके कारण शरीर की रक्षा करते हो, उसको भोजन देना भी आवश्यक है।

इसलिए भगवान राम ने पूछा, "गुरुदेव! शरीर को हम प्रतिदिन भोजन देते हैं, आत्मा को क्या खिलायें ?"

गुरु वसिष्ठ ने उत्तर दिया, "राम! इस आत्मा की भेंट ध्यान ही है और ध्यान ही इसका बड़ा अर्चन है, वही इसका पूजन है, उसके बिना यह आत्मा कभी प्राप्त नहीं होता।"

ध्यानोपहार एवात्मा ध्यानमस्य महार्चनम्।
बिना तेनेतरे गायमात्मा लभ्यते एव नो।।

तो श्रद्धा उत्पन्न करने के लिये पहली चीज़ है यह ध्यान। महर्षि दयानन्द ने कहा, "प्रत्येक आर्य को कम–से–कम दो घण्टे ध्यान लगाना चाहिए, क्योंकि ध्यान के बिना आत्मा में जागृति उत्पन्न नहीं होती, वह प्रकाशित नहीं होती।"

मेरा अनुभव भी यही कहता है कि जब तक ध्यान में न जाओ, तब तक आत्मा का पता नहीं लगता। ध्यान में पहुंचकर ही इसके दर्शन होते हैं। ध्यान में ही वह ऋतम्भरा बुद्धि उत्पन्न होती है जो वास्तविकता को सामने लाकर खड़ा कर देती है। इसके उत्पन्न होते ही अन्दर की ज्योति जग जाती है, अंधेरे का विनाश हो जाता है।

दुनिया में हम देखते हैं कि चोर, उचक्के और दूसरे अपराधी तभी तक निर्भय घूमते हैं जब तक सूर्य की रोशनी न हो; सूर्य की रोशनी होते ही वे सब भागते हैं, कहीं दिखाई नहीं देते। अन्दर की दुनिया में भी यही हाल है। अन्दर का सूर्य जब चमकता है, अपनी उस ज्योति को फैलाने लगता है जो करोड़ों और अरबों सूर्यों की रोशनी के समान है, तब पाप और अनाचार के चोर भाग जाते हैं, अंधेरा भाग जाता है स्याही भाग जाती है। तब इस महान् ज्योति में आत्मा के दर्शन होते हैं। कैसे होते हैं, यह फिर कभी बताऊंगा।

ध्यान के बाद श्रद्धा को पैदा करने का दूसरा साधन ज्ञान है। ज्ञान दो प्रकार का होता है—एक प्रकृति के सम्बन्ध में, दूसरा आत्मा के सम्बन्ध में। यह बिजली, नदियाँ, तारे, सितारे, चांद, सूर्य, हवा, पानी, आग, यह सब प्रकृति के है। प्रकृति के पृथ्वी, फल, पत्ते, वृक्ष, पहाड़, विभिन्न रूप हैं। इनसे सम्बन्धित ज्ञान को प्राप्त करके आत्मा से सम्बन्धित वास्तविकता को जानना पड़ता है, समझना है कि आत्मा क्या है, और वह क्या है जो आत्मा नहीं।

पंजाब में मकान बनाने से पूर्व लोग 'गौ' बनाते हैं, दिल्ली में शायद उसे 'पैड़' कहते हैं। प्रकृति के ज्ञान से आत्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पैड़ बनाई जाती है। इसको कहते हैं अविद्या के द्वारा विद्या को प्राप्त करना, अनात्म की खोज से आत्मा के पास पहुंचना। प्रकृति के रूप को अच्छी प्रकार देख लेने और समझ लेने के पश्चात् भक्त जब आत्मा को देखता है तो पुकारकर कहता है, 'ओ ठगिनी माया! मैंने तुझे देख लिया। मैंने तेरी वास्तविकता को पहचान लिया, पेट भर गया मेरा। अब मैं उसके पास जाऊंगा जो तेरी तरह चंचल नहीं, बदलता नहीं, धक्के नहीं खाता, जो शान्त और निश्चल है, जो सबको चलाता है स्वयं नहीं चलता, जो सबको खिलाता है स्वयं नहीं खाता, जो सबको देखता है, सबको जानता है, उसके पास जाना है मुझे। वह मेरा है, तू मेरी नहीं, तू किसी की भी नहीं।' यह है ज्ञान की महिमा, ज्ञान से श्रद्धा उत्पन्न होने का उपाय!

तीसरी बात है अटल विश्वास—यह विश्वास कि भगवान है। परन्तु आजकल तो बहुत से लोग कहते हैं कि 'भगवान है ही नहीं।' कुछ और लोग कहते हैं कि 'यदि है तो सोया पड़ा है, कुछ करता नहीं।' और कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि 'यदि सोया नहीं पड़ा है तो बहुत बूढ़ा हो गया है, उससे कुछ होता नहीं।'

कौन उन्हें बताये कि ईश्वर आज भी सुनता है, सदा सुनता आया है, सदा सुनता रहेगा ? पुकारने वाला चाहिए, सुनने वाला तो सामने खड़ा है, वह कभी कहीं नहीं गया। सामवेद १०१ वें मन्त्र में कहता है, "जीवन को श्रीवाला (धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष–वाला) बनाने के लिए मेधा बुद्धि को परमात्मा से मांगी।" इसका वर्णन सामवेद के ३४६ वें मन्त्र में आता है—"हे महान् परमेश्वर! जो मनुष्य अपने–आपको आपके अर्पण कर देता है, जो शारीरिक और मानसिक बल वाला है, इन्द्रियों का स्वामी है, उसकी टेर आप अन्तर्धान होकर सुनते हैं।"

वह अवश्य सुनता है, उसे पुकारकर देखो, सच्चे हृदय से पुकारो, अटल विश्वास के साथ पुकारो, उसका कीर्तन करते जाओ, यूँ अनुभव करो कि वह हर ओर है। हर समय उसके गुणों को याद करो, उसमें खो जाओ, फिर कुछ कहके देखो कि वह बात पूरी होती है या नहीं। महर्षि दयानन्द 'ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका' में कहते हैं, "साधारण पानी से लेकर मोक्ष तक भगवान से मांग।" मांग कि वह देनेवाला है, मांग कि उसके भण्डार में किसी वस्तु की कमी नहीं। जो व्यक्ति इस प्रकार अटल विश्वास के साथ ईश्वर के नाम का कीर्तन करते हैं, उनकी वाणी में ऐसी मिठास, ऐसा आकर्षण आ जाता है कि सुननेवाले मोहित हो जाते हैं। अकबर के दरबार का गवैया था तानसेन। कहते हैं कि वह जब मल्हार गाता तो वर्षा होने लगती। जब वह दीपक राग गाना आरम्भ करता तो दीपक जल जाते। एक दिन अकबर ने कहा, "तानसेन! यह सब–कुछ तुमने जिससे सीखा है, उसका

www.thearyasamaj.org

संगीत हमें भी सुनवाओ!'' तानसेन ने कहा, ''शहंशाह! मेरे गुरु स्वामी हरिदास हैं, आपके दरबार में वे नहीं आयेंगे। मेरी तरह उन्हें आपसे कुछ लेना नहीं है। वे जंगल में रहते हैं पत्तों की झोपड़ी बनाकर। वहीं कहीं मौज आ जाए तो अपना दुतारा लेकर गाने लगते हैं, किसी के लिए वे गाते नहीं।'' अकबर ने कहा, ''वे नहीं आ सकते, तो चलो हम उनके पास चलें, एक बार उनके दर्शन तो कर लें!''

तानसेन बादशाह को लेकर उस जंगल में गये, जहाँ हरिदास स्वामी रहते थे। देखा–हरिदास कुटिया के बाहर ध्यान में मग्न हुए बैठे हैं, चुपचाप शांत। एक दुतारा उनके पास पड़ा है परन्तु वह भी बेआवाज़।

बादशाह ने धीरे–से कहा, ''तानसेन! यहाँ आकर भी क्या हम प्यासे जाएँगे ? क्या कोई ऐसा उपाय नहीं कि स्वामी हरिदास गाने लगें ?''

तानसेन ने कहा, ''प्रयत्न करता हूँ शहंशाह, आप चुपचाप खड़े रहिये!''

और अपनी सितार उठाकर उसने बजाना शुरू कर दिया। थोड़ा ठीक बजाया, फिर जान–बूझकर गलत बजाने लगे। हरिदास ने सुना तो झुंझला उठे; बोले, ''ग़लत बजाते हो तानसेन, सुनो!'' और अपना दुतारा उठाकर वे बजाने लगे। उसके साथ–साथ गाने लगे। जंगल का आकाश गूंज उठा। वृक्ष और पौधे झूम उठे। जंगल के हिरन स्वामी हरिदास के पास आकर खड़े हो गए। जंगल के पक्षी शांत हो गये। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे चलती हुई हवा भी ठहर गई। बादशाह मस्त हो गये। कितनी देर हो गई, यह भी उन्हें पता नहीं लगा। अन्ततः जब हरिदास ने गाना बन्द किया तो बादशाह और तानसेन प्रणाम करके वापस आ गये। रास्ते–भर बादशाह बोल नहीं सके। संगीत की मधुर ध्वनि अभी तक उनके कानों में गूंज रही थी। रात्रि के समय बादशाह ने कहा, ''तानसेन! तुम बहुत अच्छा गाते हो, भारतवर्ष में सबसे महान गायक हो तुम, फिर भी तुम्हारे गाने में वह रस क्यों नहीं, वह मस्ती क्यों नहीं जो स्वामी हरिदास के गाने में है ?'' तानसेन ने हाथ जोड़कर कहा, ''शहंशाह! मुझमें और हरिदास में बहुत अन्तर है। मैं हूँ दिल्लीपति का गवैया, दिल्लीपति के लिए गाता हूँ। स्वामी हरिदास जगत्पति के गायक हैं; उसके लिए गाते हैं, जो करोड़ों दिल्लीपतियों को उत्पन्न और नष्ट कर देता है। जितना गुड़ हो उतना ही मीठा होता है। वे बड़े दरबार के गायक हैं, मैं छोटे दरबार का गायक हूँ।''

अकबर से सुना, सोचा और चुप हो गया। धीरे–से उसने अपने मन में कहा, ''जो भगवान के गुण गाता है, उसकी वाणी में रस होगा ही।''

''वैराग्य भजन''

♦मिलाप चन्द, आर्यसमाज नगरोटा बगवां

मत भूलो हम सदा एक जैसे रहेंगे,
बचपन को देखा ठोकरें खा–खा कर, फिर युवा हुए।
घर की दौड़, स्कूल का बोझ उठाते हुए
पढ़ लिखकर माता–पिता ने नौकरी के लिए,
कारोबारी के लिए घर से बाहर भेजा,
जगह–जगह भटके, ठोकरें खा–खा कर
सब जगह देखा कोई ठिकाना न बन सका।
बचपन में कोई दस्तकारी, दुकानदारी, खेतीबाड़ी सीखी होती
तो क्यों ठोकरें खाते फिरते।
पुराने समय में दुकान दार, अपने बेटों को दुकान पर,
किसान अपने बेटे को खेतीबाड़ी के लिए,
लोहार तरखान अपनी दस्तकारी के लिए
अपनी संतानों को तैयार करते थे।
आज पढ़ाई ने सब का बेड़ा गरक कर दिया
न इधर के रहे न उधर के रहे,
दुनियां की नज़रों से गिरते रहे।
परिश्रम से मेहनत कर के, जो मिला उस से सन्तोष करो
उत्तम कर्म कर के अपनी जीवका चलाते रहो,
बेईमानी से दूर रहो, मेहनत ही काम आएगी।
''मिलापचन्द'' बुढापा भगवान भजन करके बिता डाल
वैराग्य का पाठ प्रतिदिन कर, प्रभु सुख से ले जाएगा।

''धर्म की रक्षा व बढ़ोतरी''

♦श्री राम कायस्था, आर्यसमाज नगरोटा बगवां

धार्मिक रीति रिवाजों, परम्पराओं एवं मर्यादाओं से ही धार्मिकता आगे बढ़ती है और कायम रहती है। समाज में धार्मिकता से ही प्रेम, शान्ति व भाईचारा कायम रहता है। परमात्मा को भी इसी धार्मिकता ने इस संसार में कायम रखा है। अन्यथा लोग कब के भूल चुके होते। अन्य धार्मिक अनुष्ठानों, उत्सवों, भजनों कीर्तनों ने धर्म के प्रति रक्षा व बढ़ोतरी का काम किया है। इस तरह आर्य समाज का दैनिक हवन भी ठीक इसी कड़ी का हिस्सा है। नगरोटा बगवां आर्य समाज में नित्य दैनिक हवन सुबह ६ से ७ बजे तथा साप्ताहिक हवन रविवार सुबह ८ से ६ बजे भी इसी दिशा में एक कदम है। इससे लोग पुरानी परम्पराओं से जुड़ते हुए महर्षि दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए धर्म की रक्षा व बढ़ोतरी करते हुए परमात्मा व मोक्ष को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

www.thearyasamaj.org

समाचार

दयानन्द मठ दीनानगर जिला गुरदासपुर के संन्यासी स्वामी सदानन्द जी महाराज ने जन्माष्टमी के पावन अवसर पर सुन्दरनगर कालौनी में पूर्णाहुति के उपरान्त योगीराज श्री कृष्ण के जीवन पर सारगर्भित प्रवचन दिया। आर्य समाज कालौनी के वार्षिक उत्सव में पधारे स्वामी सदानन्द जी ने बीमार लोगों को निःशुल्क दवाईयें भी दी। २५ से २८ अगस्त २०१३ तक वार्षिक उत्सव में भाग लेने के उपरान्त स्वामी सदानन्द जी महाराज आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहड़ी पधारे। उनके साथ गुरुकुल के विद्यार्थी तथा उत्तर भारत के आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भंजनोपदेशक पं. हरिश्चन्द्र जी जो अब हरिश मुनि के नाम से जाने जाते हैं पधारे। रात्रिकालीन कार्यक्रम ७.३० से १० बजे तक चला। आर्य समाज का हॉल श्रद्धालुओं से खचाखच भरा था। इस अवसर पर कालौनी आर्यसमाज के प्रधान श्री रामफल सिंह आर्य, सचिव श्री सत्यप्रकाश एवं कोषाध्यक्ष श्री नरेश कम्बोज के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति भी पधारे थे। श्रीमति सरला गौड, श्रीमति रमा शर्मा, श्रीमति रानी आर्य जी ने अपने सुमधुर भंजनों से सभी को भक्ति रस का पान करवाया। सुप्रसिद्ध भंजनोपदेशक पं. हरिशचन्द्र जी ने योगीराज कृष्ण की महिमा का गुणगान किया। श्रीरामफल आर्य जी ने अत्यन्त सारगर्भित बातें योगीराज श्री कृष्ण जी के संबन्ध में बताई। अन्त में भगवां वस्त्रधारी स्वामी सदादन्द महाराज ने अपने विचारों की अमृत वर्षा की। उन्होंने योगीराज कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन धन्य करने की बात कही। श्री कृष्ण के पद चिन्हों पर चल कर मानवता का उद्धार और दानवता का संहार सम्भव है। १०३ श्रद्धालुओं ने ज्ञान अर्जित किया। शांति पाठ के उपरान्त यज्ञ शेष बांटा गया। डा. सुकर्मा की ओर से सभी को प्रसाद वितरित किया गया।

कुशलक्षेम

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ के महामन्त्री श्री भक्त राम आजाद जी का अपने घर के छप्पर को ठीक करते गिर जाने से उपचाराधीन थे उनकी टांग में पलसत्तर चढ़ा दिया है। डाक्टरों ने उन्हें विश्राम करने का परामर्श दिया है। अब वे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

•श्री निरंजन सिंह ठाकुर सेवानिवृत अधिकारी और पैंशनर संघ और आर्य समाज के नेता कुछ समय से अस्वस्थ चले आ रहे थे। अब पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त रहे हैं। पैंशनर कल्याण संघ एवं आर्य वन्दना परिवार इन दोनों विभूतियों की दीर्घायु और सुन्दर स्वास्थ्य की कामना करता है।

संघ समाचार

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ जिला मण्डी की कार्यकारिणी की प्रथम बैठक दिनांक २० सितम्बर २०१३ को ११ बजे आर्य समाज, खरीहड़ी सुन्दरनगर में जिला प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी। इस बैठक में पं. मनोहर लाल जी सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अभिवक्ता मुख्य अतिथि होंगे। सभी खण्डों के पैंशनरों से अनुरोध है कि समय व स्थान पर पधार कर कृतार्थ करें।

—भगत राम आजाद, महामन्त्री, जिला मण्डी

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ बल्ह खण्ड की बैठक डडौर पंचायत के प्रांगण में बल्ह के गांधी चौधरी पीरूराम के सुपुत्र खण्ड प्रधान श्री मंगत राम चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में सर्व श्री माया राम, वरिष्ठ पैंशनर नेता नानक चन्द सेनी, ललितकुमार कोषाध्यक्ष ने सदस्यता अभियान पर जोर दिया। वर्षा से हुये भयंकर हानि के लिये मुख्यमन्त्री राहत कोष में सहयोग करने की अपील की। इस बार उपस्थिति सराहनीय रही। वरिष्ठ पैंशनर नेता नानक चन्द सेनी खण्ड प्रधान श्री मंगत राम चौधरी, सचिव श्री जयराम नायक ने मुख्यमंत्री से पंजाब आधार पर पैंशनरों को गणतन्त्र दिवस पर पंजाब आधार पर सभी वित्तीय सुविधायें देने की घोषणा करने का अनुरोध किया जिला प्रधान कृष्ण चन्द आर्य ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव में पूर्ववत बुजुर्ग पैंशनर राजा वीरभद्र का समर्थन करेंगे।

'आभार व्यक्त किया'

हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ जिला मण्डी के मुख्य संरक्षक डा. अमरनाथ शर्मा सलाहकार खेमचन्द ठाकुर वरिष्ठ उपप्रधान लालमन शर्मा, प्रदेश सचिव नानक चन्द सेनी मुख्य संगठन सचिव शम्भू राम जसवाल सयुक्त सचिव रमण चन्द गुप्ता, कोषाध्यक्ष जय राम वर्मा नगर परिषद् अध्यक्षा गिरिजा गौतम, चन्दु सिंह ठाकुर, मोहन सिंह, विनोद स्वरूप जिला प्रधान कृष्ण चन्द आर्य ने स्वतन्त्रता दिवस पर मुख्यमन्त्री वीरभद्र सिंह द्वारा प्रदेश के पैंशनरों को ८ प्रतिशत मंहगाई राहत देने की घोषणा करने का हार्दिक स्वागत व्यक्त किया। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि मुख्यमन्त्री वीरभद्र सिंह शीघ्र ही लम्बे समय से लटके आ रहे पंजाब आधार पर समस्त वित्तीय लाभ हिमाचल के बुजुर्ग पैंशनरों को देने के आदेश जारी करेंगे। जिला प्रधान कृष्ण चन्द आर्य ने मुख्यमन्त्री से करूणामूल आधार पर लटके हुये केसों को भी शीघ्र आदेश करने तथा समस्त चिकित्सा बिलों के भुगतान के लिये एक पर्याप्त चिकित्सा राशि का प्रबन्ध करने का अनुरोध किया है, ताकि आर्थिक रूप से पीड़ित पैंशनरों को समुचित चिकित्सा कराने का सुअवसर मिल सके। प्रदेश के पैंशनरों को पूर्ण विश्वास है कि वर्तमान सरकार श्री वीरभद्र सिंह के नेतृत्व में पैंशनरों को पूर्व सरकार की तरह आर्थिक लाभ से वंचित नहीं करेगी। —कृष्ण चन्द आर्य, प्रधान, जिला मण्डी

www.thearyasamaj.org

''विनम्र अपील''

प्रिय आत्मीय जनों

सप्रेम नमस्ते,

आप लोगों की कुशलता में ही हमारी कुशलता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आप सब को परिवार सहित सब प्रकार से कुशलपूर्वक रखें। स्वामी जी महाराज की अस्वस्थता के कारण मैंने आप सब आश्रम के हितैषियों से सम्पर्क साधना शुरू किया था। पत्रों द्वारा यहां की गतिविधियों की जानकारी देनी आरम्भ की थी, ईश्वर की कृपा से और आप सब लोगों की मंगल कामनाओं से स्वामी जी महाराज का स्वास्थ्य आशातीत ठीक हो गया। अतः मैं शेष कार्यों में संलग्न हो गया। यहां समाज सेवा के कार्य तथा अन्य गतिविधियां पूर्ववत् ही चलती रहीं, जिनकी सूचना स्वामी जी महाराज आप लोगों को समय–समय पर देते रहे होंगे। अगर कभी स्वास्थ्य में होने वाले उतार–चढ़ाव के कारण न भी दें पाए हों तो भी यहां सभी काम सुव्यवस्थित रूप से चलते रहे। हर तीसरे माह निःशुल्क आंखों के कैम्प, सहायता कार्य चिकित्सा के माध्यम से सेवा कार्य, ऑपरेशन आदि तथा दैनिक यज्ञ योगादि कार्य यह आप लोगों के ही सहयोग से चलते रहे। बिना अपील के स्वाभाविक रूप से आप लोगों के द्वारा भेजी राशि से ही यह सब चलता रहा है।

इस समय कई दिनों से चल रही भारी मूसलाधार बारिश के कारण एक बहुत बड़ी आपदा यहां उपस्थित हो गई है जिसके कारण हमारे सभी आगामी कार्यक्रम जिसमें आंखों का कैम्प, शारद यज्ञ का कार्यक्रम बाधित हो गए हैं। यज्ञशाला के सामने वाले ग्राउण्ड का सारा का सारा डंगा (दीवार) गिर गया है। सभी कार्यक्रमों का केन्द्र यही ग्राउण्ड था। इसी में विद्यालय के बच्चे खेलते रहते हैं। इसी में इनकी प्रातः कालीन प्रार्थना होती है। यह सभी दीवार के गिरने से बाधित हो गए हैं। पिछले दो तीन वर्षों से इस मैदान को आगे पिल्लर देकर बड़ा करने की भी योजना चल रही थी। अर्थाभाव में उस पर कार्यवाही नहीं हो पा रही थी। यही सोचकर समय निकाल रहे थे कि चलो इस साल नहीं तो अगले साल इस पर कार्यवाही करेंगे। पर अब अकस्मात् ही भारी बारिश के कारण इस पर काम जरूरी हो गया है। अन्यथा हानि हो जाएगी, बिल्डिंग को भी खतरा है। अतः आप लोगों से अनुरोध करने के लिए तत्पर हुआ हूँ। आश्रम की गतिविधियां चलती रहें इसके लिए इसका सुव्यवस्थित रूप से निर्माण व विस्तार जरूरी है। लगभग १० लाख का खर्चा अनुमानित है। इसके लिए यथासम्भव सहयोग देकर इस कार्य को पूरा कराने का उपक्रम आप लोग करें। संस्था आप लोगों की है। हम चौकीदार हैं। सूचना देना हमारा कर्त्तव्य बनता है, उस पर कार्यवाही तो आप लोगों ने ही करनी है। अस्तु अक्तूबर मास में मठ का वार्षिक उत्सव व शारद यज्ञ भी होना है उसे अब सरस्वती होतृ सदन में करने का विचार कर रहे हैं। समय सीमा तो पूर्ववत् ही रहेगी पर बैठने के लिए स्थान संकुचित होगा। आहुतियाँ डालने के लिए बाहर आंगन में प्रतीक्षा में बैठना पड़ेगा। शेष जैसी ईश्वर की इच्छा। रास्ता उसी ने दिखाना है। कार्य उसी ने सफल करना है। हम और आप तो निमित मात्र हैं और हमें निमितमात्र बनने के लिए तत्पर रहना चाहिए। ईश्वर सबका कल्याण करेंगे। एक बार पुनः प्रार्थना–अनुरोध व सूचना संप्रसारण के साथ आपका अपना ही

—आचार्य महावीर, उपाध्यक्ष
दयानन्द मठ चम्बा

इस पत्रिका हेतु अपने ईष्ट मित्रों और शुभचिन्तकों को भी सदस्य बनायें। प्रदेश की आर्य समाजों और आप के पावन सहयोग से ही आर्य वन्दना का अंक हर मास प्रकाशित हो रहा है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200

१. आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर, (खरीहड़ी) (हि० प्र०)

२. उप–कार्यालय, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, मण्डी (हि. प्र.)

आप अपने लेख निम्न पते पर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं : arya.bandana@gmail.com

वैचारिक क्रांति के लिए महर्षि दयानन्द की अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

www.thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000

Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

नगरोटा बगवां में आर्य वीर दल के बच्चे प्रार्थना मन्त्रों का उच्चारण करते हुए।

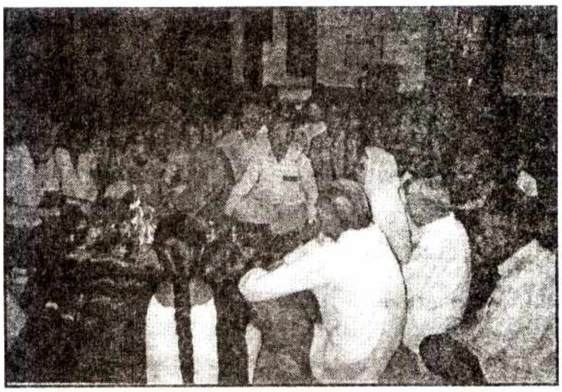

नगरोटा बगवां के वार्षिक उत्सव पर पूर्ण आहुति डालते सदस्य।

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''

♦दीनदयाल बिष्ट, सन्नी साइड, सोलन (हि. प्र.)

मूल मंत्र सन्धि–विच्छेद के साथ :

''इन्द्रम् वर्धतः अप्तुरः कृण्वन्तः विश्वम् आर्यम्। अपध्नतः अरावणः।

ऋग्वेद, मण्डल–६, सूक्त–६३, मंत्र–५।

प्रकरण–राजधर्म

(इन्द्रम्) राजा अपने ऐश्वर्य, सम्पन्नता को, (वर्धतः)–बढ़ाते हुये, (अप्तुरः)–प्रजा को सन्मार्ग पर; (कृणवन्तः)–प्रेरित कर, (अरावण)–दुष्ट शत्रुओं को, (अपध्नतः)–मार कर भगाते हुये (विश्वम्)–सम्पूर्ण समाज को, (आर्यम्)–श्रेष्ठ बना दें।

अर्थात् समाज को उन्नत और श्रेष्ठ बनाने के लिये राजा को ३ काम करने हैं–

१. अपने ऐश्वर्य–चतुर्मुख विकास, सम्पन्नता को बढ़ाना।
२. प्रजा को सन्मार्ग पर चलाना। और
३. दुष्ट शत्रुओं को मार कर भगाना।

नोट : विषय को स्पष्ट समझने के लिये मण्डल–६, सूक्त–६३ के सभी ३० मंत्रों का अवलोकन करें।

श्री खेमचन्द ठाकुर व श्रीमती लीला ठाकुर

साभार

श्री खेम चन्द ठाकुर पूर्व बी. पी. ई. ओ. गांव व डाक. नागचला, तह. सदर, जिला मण्डी ने ₹ ५००, श्री गोपाल शर्मा निवासी कटेरू, डा. मौवी देवी गलू, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ २००, श्री टेक चन्द भण्डारी गांव चौक व डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ २००, श्री दिगविजय प्रिंसीपल रा. व. मा. पा. सलवाणा तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹२००, श्री नन्द लाल, निवासी हरिपुर, सुन्दरनगर ने ₹१०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।